हवाई गोले

(यह नाटक देश के विशाल रंगमंच पर खेला जा रहा है। इस मंच के तीन हिस्से हैं। एक हिस्सा सबसे ऊपरी स्तर पर है, यहां लोकतांत्रिक सरकार की लोकसभा है। यहां दो पात्र सरकार और अपोज़ीशन अपनी नाटक कला का कमाल दिखाते हैं। दूसरे स्तर पर एक सरकारी दफ़्तर है, यहां सरकार और सरकारी कारिंदा अपनी कार्यवाही करता है। ज़मीनी स्तर पर देश की समूची जनता है। नाटक शुरु होने से पहले पर्दे के पीछे से आवाज़ आती है—

"लोकसभा का शरद्कालीन सत्र शुरू हो गया है, उम्मीद की जा रही है कि इस सत्र में सरकार और अपोज़ीशन में बहुत गरमागरमी रहेगी।" स्पॉट लाइट ज़मीनी स्तर पर पड़ती है, यहां एक साधारण आदमी बावरा-सा हुआ दीखता है। वह दर्शकों को संबोधित करता है)

आदमी : सर्दियों में गरमागरमी... हां हां ... हवा अनुकूल, लोकसभा में गरमागरमी... गरमागरमी... आप पूछेंगे यह मेरे हाथ में क्या है ? यह दवा की शीशी है... मेरा बच्चा बीमार था... मैं उसके लिए दवा बाजार से लाया... पर शीशी में दवा नहीं थी, ज़हर था... काले धन का ज़हर, काले बाजार का ज़हर, बेईमानी का ज़हर, मिलावट का ज़हर... और मेरा बच्चा मर गया... हां हां मेरा बच्चा मर गया... *(पागलों की तरह हंसता है, अब मूर्ख दर्शक उसकी हंसी पर हंसने लगते हैं पर वह चीख कर कहता है)* तुम हंस रहे हो, पर फिक्र मत करो, जो मुझ पर बीत रही है वो कल आप पर भी बीत सकती है। उस वक़्त बस यही होगा कि जो नन्हा बच्चा आपकी गोद में उस वक़्त खेल रहा है, वो कल वहां नहीं रहेगा... ।

(वह चला जाता है, दर्शकों में सन्नाटा छा जाता है। स्पॉट लाइट सबसे ऊपरी स्तर पर लोकसभा के पात्रों पर पड़ती है, यहां अपोज़ीशन (अ) और सरकार (स) में सवाल-जवाब हो रहे हैं।)

अ : मैं सरकार से सवाल पूछना चाहता हूं।

स : सरकार अपोज़िशन को जवाब देने के लिए तैयार है।

अ : खाने पीने की चीज़ों में जो मिलावट हो रही है, सरकार उस बारे में क्या कर रही है?

स : सरकार उस बारे में ज़रूरी कार्यवाही कर रही है।

अ : क्या कार्यवाही कर रही है?

स : सरकार ने अपने अधिकारियों को हुक्म दिया है कि मिलावट को रोका जाए।

अ : फिर यह रुकी क्यों नहीं?

स : क्योंकि लोग बेइमान हैं।

अ : लोग बेइमान हैं या अधिकारी रिश्वतखोर हैं?

स : सरकार रिश्वतखोरी को रोकने के लिए कार्रवाई कर रही है।

अ : क्या कार्रवाई कर रही है?

स : सरकार ने पंचवर्षीय योजना में पांच करोड़ रुपये की राशि इस मद के लिए रखी है ताकि लोगों में रिश्वतखोरों के विरुद्ध प्रचार किया जा सके और सरकार को इस बारे में जो रिपोर्ट्स मिली हैं, उनके अनुसार प्रोग्रेस बहुत ही संतोषजनक है। पांच करोड़ में से तीन करोड़ खर्च हो चुके हैं।

अ : इसका नतीजा क्या निकला?

स : सरकार का काम नतीजे देखना नहीं है, बल्कि काम करना है और सरकार अपना काम कर रही है।

अ : क्या काम कर रही है?

स : वो देखो।

(स्पॉट लाइट अब मध्यम स्तर पर मंच पर पड़ती है। एक सरकारी अफ़सर टेलीफोन कर रहा है।)

अफ़सर : जी हां, मैं पब्लिसिटी अफ़सर बोल रहा हूं...

क्या पूछा? रिश्वत के विरुद्ध अभियान में हमने क्या कदम उठाए हैं, जी बहुत कदम उठाए हैं।

हमने दो लाख इश्तिहार अलग-अलग शहरों में लगवाए हैं। मंत्री जी की बड़ी तस्वीर तीन रंगों के ब्लॉक में बनवाई है। दिखने वाले दांत सफेद रहने दिए हैं। दिल वाली जगह काला धब्बा बनाया है। हाथ खून रंगे बनाए हैं। शब्द हरे इन्कलाब के हरे रंग से लिखे हैं...

क्या पूछा, क्या शब्द? हर किस्म के शब्द, जिस तरह रिश्वत लेना और देना पाप है। रिश्वतखोर देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं... क्या पूछा? रेट प्रति इश्तिहार क्या दिया है? जी, रेट जो फर्म ने मांगा, वही देना था क्योंकि मंत्री जी ने खुद ही फर्म की सिफारिश की थी, बेशक मार्किट से मैं यह काम आधी कीमत पर करवा सकता था... हां जी यह आपने ठीक कहा, उन्हें भी तो इलेक्शन का ख़र्च कहीं से निकालना ही होता है... आप महकमे के दशांश की चिंता मत करो, वो मैंने निकाल लिया है, ये मंत्री तो आते-जाते रहते हैं, हमें तो जनाब यहीं रहना है... जय हिंद जनाब।

(स्पॉट लाइट अब फिर मध्यम स्तर पर और फिर लोकसभा पर पड़ती है। अपोज़िशन और सरकार के पात्र वाद-विवाद कर रहे हैं)

अ : मैं सरकार से सवाल पूछना चाहता हूं।

स : सरकार जवाब देने के लिए तैयार है।

अ : रिश्वत और दशमांश में क्या अंतर है?

स : एक राजनीति का शब्द है दूसरा धर्म-मर्यादा का शब्द है।

अ : सरकार रिश्वत और दशमांश में से किस पर यकीन करती है।

स : क्या बेहूदा सवाल है।

अ : हम बेहूदा सवाल पूछने ही यहां आए हैं।

स : पर हम इसका जवाब देने को तैयार नहीं हैं।

अ : पर आपको इसका जवाब देना ही होगा क्योंकि इससे देश के लाखों लोगों की ज़िंदगी-मौत का सवाल जुड़ा है।

स : क्या मतलब?

अ : सरकार और अधिकारियों की लापरवाही से देश के एक हिस्से में अकाल पड़ गया है।

स : कहां पड़ा? अपोज़िशन बात को बढ़ा रहा है।

अ : वो देखो।

(स्पॉट लाइट साधारण स्तर पर है। एक मां अपने बेसुध बच्चे को लिए बैठी है। उसका पति, जो गरीब किसान है, मंच पर आता है।)

किसान : राधा, छोटू का क्या हाल है अब?

राधा : बेसुध पड़ा है, कह रहा था पेट में दर्द है, मैंने पत्तों का साग बनाकर दिया, थोड़ा-सा खाया, फिर उल्टी कर दी और अब बेसुध पड़ा है।

किसान : निढाल हो गया होगा बेचारा!

राधा : चावलों का कोई बंदोबस्त हुआ क्या ?

किसान : चावलों का एक दाना भी नहीं मिला।

राधा : बताते हैं कि काला बाज़ार में सबकुछ मिल रहा है।

किसान : हां, काला बाज़ार में सब कुछ मिल जाता है।

राधा : अगर चावल न मिले तो मुझे डर है कि... ।

किसान : तुझे डर है कि ललवा की तरह यह भी न मर जाए... हम सबको मर जाना चाहिए।

राधा : कैसी अनहोनी बातें कर रहे हो ?

किसान : अनहोनी बातें न करूं, ये हाथ जिन्होंने हजारों मन चावल उगाया, आज चावलों के दाने दाने को मोहताज हैं। इससे तो मौत ही भली।

(स्पॉट लाइट फिर लोकसभा पर पड़ती है।)

अ : मैं पूछना चाहता हूं कि सरकार अकाल को रोकने के लिए क्या कर रही है ?

स : सरकार ज़रूरी कदम उठा रही है।

अ : क्या कदम ?

स : सरकार ने सबसे पहले इलाके का हवाई सर्वेक्षण किया है।

अ : वहां सरकार ने क्या देखा।

स : वहां लोग कीड़ों की तरह दिखाई दिए।

अ : क्या कीड़े वास्तव में भूखे थे ?

स : हां।

अ : तो फिर सरकार ने क्या किया ?

स : सरकार ने अपने अधिकारियों को हुक्म दिया कि भूखे लोगों तक खुराक पहुंचाई जाए।

अ : क्या खुराक पहुंची ?

स : नहीं।

अ : क्यों ?

स : क्योंकि गाड़ियां बंद हैं।

अ : गाड़ियां क्यों बंद हैं ?

स : क्योंकि कोयला नहीं मिला।

अ : कोयला क्यों नहीं मिला ?

स : क्योंकि खदानों में हड़ताल है।

अ : हड़ताल क्यों है ?

स : मजदूर ज़्यादा तनख़्वाह मांगते हैं।

अ : क्यों ?

स : वे कहते हैं कि महंगाई बढ़ गई है।

अ : क्या महंगाई नहीं बढ़ी है ?

स : सरकार ने इस बारे कमिशन मुकर्रर किया है।

अ : किसलिए ?

स : यह देखने के लिए कि महंगाई कितनी बढ़ी है।

अ : कमिशन की क्या ज़रूरत है जब अखबारों में आंकड़े निकलते हैं।

स : सरकार अखबारों की खबरों पर नहीं चलती, वह अपने आंकड़े खुद जुटाती है।

अ : वह किस तरह ?

स : सरकार सबसे पहले इलाके के कमिश्नर से पूछती है, कमिश्नर डिप्टी कमिश्नर से पूछता है, डिप्टी कमिश्नर तहसीलदार से पूछता है, तहसीलदार पटवारी से...

अ : और पटवारी किससे पूछता है ?

स : सरकारें इसी तरह कायदे से चलती हैं।

अ : पर ये आंकड़े लेने में कितना समय लगता है ?

स : क़ायदे से काम करने में वक़्त तो लगता ही है।

अ : जितनी देर में ये आंकड़े इकट्ठा होते हैं, क्या महंगाई और नहीं बढ़ जाती ?

स : बढ़ जाती है, ज़रूर बढ़ जाती है।

अ : सरकार फिर क्या करती है ?

स : सरकार फिर से आंकड़े जुटाती है, फिर कमिश्नर को लिखती है।

अ : और कमिश्नर आगे डिप्टी कमिश्नर को वो आगे तहसीलदार को और वो कानूनगो और पटवारी को... क्या मज़ाक है ?

स : कायदा तो कायदा है, अगर कोई उसे मज़ाक समझे तो यह उसकी मूर्खता है।

(ज़मीनी स्तर से चीख़ की आवाज़ आती है, मां का पुत्र मर गया है।)

स : यह चीख़ किसकी है ?

अ : एक मां का पुत्र मर गया।

स : सरकार को इस बात का बहुत अफसोस है।

अ : यह सरकार की नालायकी के कारण भूख से मरा है।

स : नहीं, वह बीमार होकर मरा है।

अ : वह बीमार इसलिए हुआ क्योंकि वह भूखा था।

स : नहीं, वह बीमार इसलिए हुआ क्योंकि उसने पत्तों का साग खाया था।

अ : पर उसने पत्तों का साग इसलिए खाया क्योंकि वह भूखा था।

स : पर टेक्नीकली वह बीमार होकर मरा है।

अ : नहीं, वह भूख से मरा है।

स : मैं अपने पक्ष में सैकड़ों सबूत पेश कर सकता हूं।

अ : मैं अपने पक्ष में हज़ार सबूत पेश कर सकता हूं।

स : सरकार इस बारे में कमिशन बैठाने को तैयार है कि बच्चा भूख से मरा या बीमारी से ।

अ : पर हम ज्युडिशियल इन्कवायरी की मांग करते हैं।

स : सरकार यह मांग नहीं मान सकती।

अ : सरकार को यह मांग माननी ही पड़ेगी नहीं तो हम आंदोलन करने पर मजबूर होंगे।

स : किस किस्म का आंदोलन ?

अ : शांतिपूर्ण आंदोलन।

स : सरकार उस आंदोलन को कुचल देगी।

अ : किस तरह ?

स : नेताओं को गिरफ़्तार कर लेगी।

अ : हम गिरफ़्तार होने को तैयार है।

स : सरकार जेलें भरने के लिए तैयार है।

अ : पर यह कितनी देर तक चलेगा ?

स : जब तक तुम्हारा जोश ठंडा नहीं हो जाता। फिर हम आपको जेलों से बाहर निकाल देंगे।

अ : हम ऐसा नहीं होने देंगे।

स : हम ऐसा ही करेंगे।

अ : हम जनता की आवाज़ हैं।

स : नहीं, हम जनता की आवाज़ हैं।

अ : नहीं, हम हैं।

स : नहीं, हम हैं।

(दोनों का शोर तेज़ होता है, तब मां और उसके साथ बावरा आदमी

स्पॉट लाइट के नीचे आते हैं। वे चीख़ कर कहते हैं।)

मां : चुप करो, तुम कुछ भी नहीं, सिर्फ वाद-विवाद हो।

आदमी : बेसुरा साज़ हो।

मां : सालों-साल ज़िंदगी तड़पती रही और तुम आतिशबाजी करते रहे, शू...सं... और ठुस्स।

आदमी : सालों-साल ज़िंदगी मरती रही और तुम सवाल-जवाब करते रहे।

सरकार : तुम हमारा सवाल-जवाब करने का हक़ नहीं छीन सकते।

अपोज़िशन : हम आए ही यहां इसलिए हैं कि सवाल करें और जवाब वे दें।

आदमी : और बात वहीं की वहीं रहे।

सरकार : ज़म्हूरियत में इसी तरह चलता है, एक सवाल करता है और दूसरा जवाब देता है।

मां : तुम्हारा लोकतंत्र एक धोखा है।

आदमी : पैसे वालों का खेल है।

सरकार : हम यह खेल खेलते हैं, क्योंकि हमें बहुमत ने चुना है कि हम तुम पर हुकूमत करें।

मां : बहुमत ने नहीं कुछेक ने।

अपोज़िशन : वह किस तरह ?

आदमी : मैं बताता हूं।

सरकार : तू ?

आदमी : जी हां, मैं मास्टर हूं, यह तो हिसाब ही सीधा है, देश की करोड़ों की आबादी में से सिर्फ पचास फीसदी की वोट बनती है, उसमें से पचास फीसदी ही वोट डालते हैं, जो जीतता है उसे डाले गए वोट का पैंतीस फीसदी मिलता है, इस तरह आप लोग सिर्फ़ आठ-नौ फ़ीसदी लोगों के नुमाइंदे हो।

औरत : हम तुम्हारी ज़म्हूरियत की बादशाहत को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

सरकार : तुम्हें करनी पड़ेगी।

आदमी : अगर न करें ?

सरकार : तो हमारी फ़ौज, हमारी पुलिस तुम्हें कुचल देगी।

मां : कितनों को कुचलेगी ?

सरकार : जितने उठेंगे।

आदमी : देखा जाएगा...

(वह पत्थर उठाकर सरकार को मारता है। दूसरी ओर से मां मारती है, देखते-देखते ही उन पर पत्थरों की बरसात होने लगती है—

सरकार और अपोज़िशन घबरा जाते हैं।)

अपोज़िशन : देखो साथियो, कानून को अपने हाथ में मत लो।

मां : कौन सा कानून ?

सरकार : जो हमने आपके लिए बनाया है।

आदमी : वह कानून जो रिश्वत को जन्म देता है।

मां : वह कानून जो हमें भूखों मारता है।

आदमी : वह कानून जो नकली दवाइयों को जन्म देता है।

मां : वही कानून, जो गरीबों की इज्जत लूटता है।

आदमी : वही कानून, जो पैसे से बिक जाता है।

मां : हम इस कानून को नहीं मानते।

(फिर पत्थरों की बरसात शुरु हो जाती है। लीडर और अपोज़िशन जिस ढांचे पर खड़े हैं, वह धीर-धीरे ढहना शुरू हो जाता है।)

आदमी : देखो इनकी बुनियादें हिल रही हैं।

मां : इनकी बुनियाद थी ही कब ?

आदमी : ये मजबूत उस वक़्त तक हैं जब तक हम कमज़ोर हैं...

(सरकार और अपोज़िशन नीचे गिर जाते हैं, वे एक दूसरे को उठाने की कोशिश करते हैं।)

सरकार : साथी उठ, अगर तू खड़ा होगा तो ही मैं खड़ा रह सकूंगा।

अपोज़िशन : साथी तू पहले उठ, तेरे सहारे ही मैं खड़ा था।

(पर ढांचा टूट चुका है, भ्रम खत्म हो जाता है, वे खड़े नहीं हो पाते।)

सरकार : *(गिरे हुए ही)* तुमने हमें गिरा तो लिया पर खड़ा किसे करोगे ?

आदमी : तुम्हें इसकी फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं, हम फिर सिरजेंगे एक नया समाज।

मां : हां, हर नई इमारत धरती पर ही उसारी जाती है।

(लीडर और अपोज़िशन सिर पर जूते रखकर भाग जाते हैं। खुशी का एक संगीत बजता है। एक नये युग का आगमन होता है और उनका युग खत्म होता है, जो लोगों की किस्मत से हवाई गोलों से खेलते हैं।)

(नोट : कुछ दर्शकों को नाटक का अंत पसंद नहीं आया, वे ज़म्हूरियत पर पत्थर बरसाने को ही नाटक का बेहतर अंत मानते हैं।)